॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

साढ़े तीनयार का

अपूर्व क़िस्सा

तीसरा और चौथा भाग ।

जिसको

यंत्रालय के श्रेष्ठ विद्वानों ने अतिपरिश्रम से शोधा

द्वितीय बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए, के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा
सन् १९१३ ई० ॥
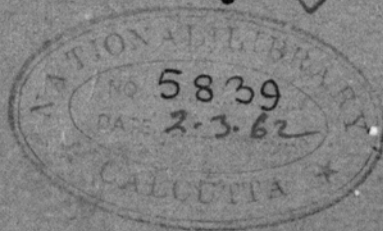
* श्रीराधाकृष्णाय नमः *

॥ क़िस्सा साढ़ेतीनयार का ॥

तीसरा भाग ॥

महाशय! आपको ख़याल होगा कि आज अविनाशचन्द्र और चन्द्रमुखी की चौथी मुलाक़ात का दिन है रात का वक़्त शुरू हुआ आठ पर गजर बजा है चन्द्रोदय का समय है हर तरफ़ चांदनी खिल रही है चन्द्रमुखी अपने महल की छत पर बैठी प्यारे अविनाशचन्द्र की बाट निहार रही है और मन में बिचारती है कि आज मैं एक ऐसी कहानी अविनाशचन्द्र को सुनाऊंगी कि जिसको सुनकर वह भी उसका जवाब न देसके तो फिर मैं अपने प्रेम का फल पासकती हूं।

बस चन्द्रमुखी यह बिचार करही रही थी कि इतने में अविनाशचन्द्र जो महलों में आया तो चन्द्रमुखी ने बाद बन्दगी के अविनाशचन्द्र को एक कुरसी पर जो निहायत

उमदा बिछी हुईथी बिठाया और कहनेलगी कि ऐसाहब! अब बीमार इश्क़ को आप इतना क्यों तरसाते हौ! प्रेम का जोश दे घायल परछूरी चलाते हो यह प्रेमके क़ानून से दूर है इस समय मैं आप पर दिलोजान से आशिक़ हूँ हमेशा आपकी ताबेदार हूं ईमान और दीन व जान मैं सब आपके ऊपर निवछावर करचुकी मगर न मालूम यह मेरे प्रेम का असर आप पर क्यों नहीं पड़ता अब ज़ियादह तर-साना अच्छा नहीं है मेरे इस हाल ख़राब पर दया कीजिये।

यह बातें चन्द्रमुखी की सुन कर अविनाशचन्द्र कहने लगा, कि हे प्यारी! ज़रा होश में आओ ऊटपटांग बातें न करो यह इश्क़ का फन्दा बहुत बुरा है इसमें फँ-सना मानो काल के मुँह में पैर देना है इस ख़याल को छोड़कर जो आपने कल क़रार किया है उसे पूरा कीजिये क्योंकि बातोंही बातों रात बीतती है इसलिये आप अपनी कहानी सुनाइये।

यह बातें अविनाशचन्द्र की सुन चन्द्रमुखी कहने लगी, कि हे प्यारे! मैं एक क़िस्सा शाहज़ादी माहेचमन सुनाती हूं।

जब माहेचमन की उमर बर्ष चौदह में हुई तो होश आया और इधर उधर की सब बातें समझने लगी इसी साल उसका बाप स्वर्गबासी हुआ और इस असार संसार को छोड़ा तब तो माहेचमन बहुत घबड़ाई और बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी तब लौंड़ियों ने इतर गुलाब सुँघाया जब होश आया तो लौंड़ियों के बहुत समझाने पर वह सावधान हो अपने पिताकी दौलत से दिन काटनेलगी।

एक दिन का ज़िकर है कि माहेचमन अपने मकान की छत पर बैठी थी लौंड़ी मज़दूरनी हवा कर रहीं थीं माहेचमन क़िस्सा लैली व मजनूं का पढ़ रहीथी कि एक बार पढ़ते २ नींद ने अपना समय पा दख़ल कर माहेचमन को बेहोश किया मज़दूरनी भी सोगई रात के दो बजे का वक़्त हुआ कि एक बार आंख खुलगई फिर वही क़िस्सा पढ़ना शुरू किया।

जब सबेरा हुआ और सूरज निकले तब नख़रे से भरी हुई माहेचमन उठी और हाथ मुँह धो ईश्वर के पूजन में लगी।

मगर माहेचमन अपने खूब सूरती के घमंड पर नश जवानी में चूर, चढ़ती हुई जवानी खुला हुआ माथा नसीब की पूरी पहले शब की बनी कि तमाम फ़रिस्ते खूबसूरती पर अपनी जान निवछावर करते थे प्रेम का दम भरते थे सब हसीनों की सरदार थी लेकिन हज़रत इश्क़ को ख़याल में न लाती थी अगर कोई इश्क़ का ज़िकर करता तो कहती इश्क़ क्या चीज़ है किसी जानवर का नाम है या कोई बलाय अनहोनी है कि जिसने हज़ारों घराने ख़राब कर दिये हैं आख़िर को इश्क़ की बाबत में ऐसी ऐसी बातें निकालती थी और हर तरह इश्क़ से परहेज़ करतीथी सैकड़ों राजकुमार इच्छा मिलनेकी रखते थे मगर यह कब ख़याल में लाती थी यह तो अपने खूबसूरती पर आप आशिक़ रहती थी।

चन्द्रमुखी कहने लगी कि हे अविनाशचन्द्र! माहेचमन का रंग रूप और चढ़ती हुई जवानी को देखकर सङ्ग की सहेलियों ने हाथ बांध कर अर्ज़ की कि माहेचमन आप अपनी शादी किसी राजकुमार से करलें।

इतनी बात सहेलियोंकी सुनकर माहेचमन बड़े घमंड

से कहने लगी कि मैं विवाह किसके साथ करूं भगवान् ने मेरे लायक़ कोई खूबसूरत मर्द पैदा कियाही नहीं जो मैं उसके साथ अपनी शादी कर ज़िन्दगी का मज़ा लूटती क्या करूं लाचार हूँ।

आख़िर को यह तो अपने खूबसूरती पर घमंड रखतीही थी कि हज़रतइश्क़ ने अपना जाल माहेचमन पर फैलाया और एक दिनकी बात है कि माहेचमन अपनी छत पर सिर के बाल खोले खड़ी थी सामने देखा कि एक किश्ती दरिया में बड़े ज़ोर के साथ चलीआती है और उसमें एक नौजवान खूबसूरत जिसकी उमर १८ अठारह बरस की होगी मछली का शिकार करता चला आता है जब महल के पास आया किश्ती ठहरादी और शिकार मछली का करने लगा।

माहेचमन से जो चार आंखें हुईं तो इश्क़ का तीर कलेजे के पार हुआ एकदम कलेजा थामकर बैठगई प्रेम का दर्द न सहसकी एकदम बेहोश होगई जब कुछ होश आया तो यह शैर पढ़ने लगी।

॥ शैर ॥

नज़र चुराऊं न आंखों को चार होने दूं।
ख़दंगे नाज़ कलेजे के पार होने दूं॥
बनां हम को ख़दंगे निगाह का तो वह।
दिलोजिगर को हमारे शिकार होने दूं॥
है मुन्तज़िर कि नख़्चीर मेरे सीने में।
समद नाज़ की छोड़ो शिकार होने दूं॥

यह पढ़कर माहेचमन ठण्ढी ठण्ढी आह की सांसें भरने लगी और कुछ देर बाद फिर यह दोहा पढ़नेलगी।

॥ दोहा ॥

हाय दिल मारा मुझ, बिना ख़ता तक़सीर।
ताब तवां दिलसे गई, देख दीद तसवीर॥

चन्द्रमुखी कहने लगी कि हे प्यारे, अविनाशचन्द्र! देखो माहेचमन ने कैसा इश्क़में हाल बना लिया कि सिर के बाल जिनमें हमेशा इतर मला करती थी उनमें आज धूल लगारही है और बेहोशी से जो सिर के बाल इधर

उधर चेहरे पर पड़े हैं मालूम होता है कि चन्द्रमा को सावन की काली घटाने चारों ओर से ढांक लिया है।

हे अविनाशचन्द्र ! जब माहेचमन को होश आया तो धीरे धीरे वह यह शैर पढ़ने लगी।

॥ शैर ॥

कूए जाना झुकायेगा यह दिल।
मुझको वहशी बनायेगा यह दिल॥
आग तन में लगायेगा यह दिल।
जान मेरी जलायेगा यह दिल॥
करके आशिक़ जमाल जाना पर।
रङ्ग वहशत जमायेगा यह दिल॥
आयकर कूचए इश्क़ में अफ़सोस।
वार उलफ़त उठायेगा यह दिल॥
वार अबरू के तीर मिज़गां के।
अपने सींने पर खायेगा यह दिल॥

बस फिर क्या था, प्रेमकी आफ़त में फँसतेही माहे-चमन का रङ्ग ढङ्ग औरही होगया; दम बदम आह की सांसें भरने लगा, हाय रे दिल हाय ! कहकर बेहोश हो

ज़मीन पर गिरपड़ी, एक दासी ने आकर सम्हाला दूसरी ने गुलाब छिड़क कर इतर सुँघाया, किसी ने इसको बेहोश देखकर कहा कि अभी तो राजकुमारी होश हवास से छत पर टहल रही थी, अब क्या होगया ? किसी ने जवाब दिया कि शायद किसी भूतकी साया न हो, एक होशियार सहेलीने कहा चुपहो ज़बान को थामो, ऐसी बातें न करो बन पड़े तो माथे पर चन्दन मलो, किसी ने कहा कि जल्द किसी अच्छे वैद्य को बुलाओ, किसी ने कहा अरी क्या पागल हुई हो, इसको कोई बीमारी नहीं है इस पर हज़रत इश्क़ ने अपना जाल फैलाया है किसी खूबसूरत को दिल दिया है यह उसकी सज़ा है एकदम बेहोश कर दिया जीने से लाचार करदिया।

दूसरी सखी ने जवाब दिया खूब हुआ यह बड़ीही घमण्डी थी प्रेम के नाम से जलती थी बल्कि सौ २ हाथ उछलती थी, भला बहिन आपही कहो वह कौनसा दरख़्त है जिसे हवा न लगी हो, यह तो बड़ी होशियार बनती थी, अपने बराबर किसी दूसरे को नहीं समझती थी अभी क्या हुआ है देखिये अगाड़ी क्या हाल होगा।

चन्द्रमुखी कहने लगी कि हे राजकुमार! माहेचमन जब कुछ होश आया, तब आंख खोलकर जो देखा अपने चारों ओर सखियों की भीड़ देख गुस्से में आकर नेलगी, कि चलो हटो जाओ मेरे पास क्यों भीड़ लगा रक्खी है अपना २ काम करो, यहां क्या तमाशा है क्या पागल समझती हौ तुम सब मेरे पास से चली जाओ अपना मुँह न दिखाओ कोई मरे या जिये तुम्हें किसी दिलकी क्या ख़बर है।

यह बातें माहेचमन की सुनकर सब सखी हाथ बांध अर्ज़ करने लगीं कि हुज़ूर हमारा क्या कुसूर है सरके घमण्ड ने सरकार को गहरा दुःख दिखाया है कि की ख़ूबसूरती से साफ़ ज़ाहिर होताहै कि आपने को दिल दिया है और उसके बदले में रंज व ग़म है। ऐ राजकुमारी! तुम तो हरएक का नाम धरती म वालों को बदनाम करती थीं सरकार! अब आप चाहे न मानें जो कुछ हाल था वह आपसे कहसुनाया। माहेचमन नाक भौंह चढ़ाकर और चेहरा बदलकर लगी कि तुम सब बड़ी ख़राब हौ मुझपर झूंठा

कलङ्क लगाती हौ और कहकर साफ़ अलग हुई
हौ ज़रा ठहरो मैं तुमको इस प्रेम का मज़ा चखा
तुम्हारी बोटियां चील कौओं को खिलाऊंगी यह क
अलग एक कमरे में जाकर अपने दिलको समझाने
अरे ऐ दिल! नासमझ! सब्र कर यह भेद किसीको
लूम न होजाय जो मुफ़्तमें बनी बनाई इज़्ज़त जा
अपना काम अपनेही हाथ से बिगड़ जाय किसी प
रोसा करना अच्छा नहीं, तू तो ख़ुद अक़्लमन्द है न
न बन, जोगियों का कपड़ा पहन जङ्गल २ में यार
ढ़ने में रात दिन लग कहीं तो पता पायेगा।

बस यह बात सोचकर जोगियों का कपड़ा
कानों में बालों के बदले मुन्दरे डाल गले में फूलों
हार पहन सिर में धूल मल जटायें खोल सामने
रखकर रूप कसने लगी।

चन्द्रमुखी कहनेलगी कि ऐ अविनाशचन्द्र!
दम माहेचमन ने अपना जोगिया बाना कसा वह
किसी शायर से कहते न बनी देखतेही रहगये जब
तरह रूप जोगिया बन गया तो आधीरात के वक़्त

खिड़की की राह कमंद डाल माहेचमन उतरी और
रूक़ की तलाश में जङ्गल को रवाना हुई, और सि-
र हाथ में ले जङ्गल की धूल छानने लगी।

वाहरे वाह प्रेम आपका अजब चाल व चलन है जिस
कभी ज़मीं पर पैर न रक्खा अपने समान किसी को न
समझा आज आपने उसी माहेचमन पर ऐसा जादू डाला
घर बार से छुड़ाकर जङ्गल ब जङ्गल फिराया जिसने
शा बालों में इतर मला आज उसी के सिर में ख़ाक
या है जिन कानों में वह अनमोल अनोखे बाले मोती
नती थी आज उन्हीं कानों में आपने मुंदरे डलवा दिये
बाश आपसा दुःखदायी कोई न होगा ईश्वर बचाये आप
नज़र किसी पर न पड़े बल्कि आप से प्रेम करना आ-
में पैर फँसाना है आपने ऐसी भोली माहेचमनको किस
लमें फँसादिया चाँद ऐसे चेहरेपर ख़ाक मलवादिया।

चन्द्रमुखी कहने लगी, कि हे अविनाशचन्द्र! माहे-
मन उस नये जवान की तलाशमें जङ्गल जङ्गल फिरती
जब चलते चलते थक जाती तो वहीं बैठ जाती और
इ गाना शुरू करती।

॥ शैर ॥

तुम्हारी याद में साहब हुआ है हाल यह अपना
मरीज़े इश्क़को आकर दिखा दीजे जमाल अपना।
तड़पती हूँ मिसाले माहीए दिन रात फ़ुरक़त में
उठा लीजेगा ऐ साहब मुहब्बतजाल ये अपना।
लबों पर जान आई है वबाले इश्क़ में साहब
बेअब बसन्त के साहब हुआ जीना मुहाल अपना।

इस क़दर उस नये जवान की जुदाई में जहां जाती वहीं यह गाना गाती थी, एक दिन का ज़िक्र है माहेचमन यारके जुदाईमें भूख प्यास को मारती ग़म खा प्रेम महाशय को आशीर्वाद देती चली जाती थी, कि धू के सबब से जो गरमी की तकलीफ़ हुई और माहेचम के माथे पर पसीना आया तो मानिन्द मोती के दमक लगा, माहेचमन इस गरमी की तकलीफ़ से घबड़ा ग सच है किसी शायर का सख़ुन है।

॥ शैर ॥

कुनद हमजिन्स बा हमजिन्स परवाज़।
कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़॥

यह महलों की रहनेवाली जङ्गल की आब हवा क्या जाने इसी सोच फ़िकर में शाम होगई मगर नौजवान का कहीं पता नहीं, माहेचमन एक दरख़्त के नीचे सितार बजा बजा मनहीं मन में रागिनी गा अपने प्राणप्यारे की आस्स में मगन थी कि इतने में सुबह का सितारा दिखलाई दिया माहेचमनने देखा कि एक पल में तमाम जङ्गल धूप से भर गया यह उसी दरख़्त की छाया में बैठी रही हाथ पांव बे हिसाब चलनेसे थकावट मान गये उस वक़्त नींद का नशा आया जुदाई दिल्दार में सोगई तसवीरेयार आंखों में फिरने लगी बेक़रारहो चौंक पड़ी इधर उधर देखने लगी कहीं पता यार का न पाया तब दीवानों की तरह रवाना हुई ॥

चन्द्रमुखी कहने लगी कि हे प्राणप्यारे ! माहेचमन को यार के जुदाईमें घूमते २ कुछ दिन बीत गये जब भूख लगती बिकल हो ज़मीन पर गिर पड़ती और आहो ज़ारी करती वाहरे महाशय इश्क़ आपने पलँगों पर लेटनेवालों को ज़मीन फ़र्श पर सुलाया मख़मल के बिछौने पर आराम करनेवालों को ख़ाकका बिस्तर दिखाया कङ्कड़ोंपर सुलाया, नासपाती खानेवालों को बनसपाती खिलाया।

जाती थीं इस क़दर रोना अपनी आंख से देखकर उस बूढ़े ने बहुत समझायां और खाने को देने लगा मगर माहे-चमन ने हरगिज़ न लिया लाचार वह बूढ़ा वहां से चल दिया और किसी तरफ़ जाकर गुप्त होगया॥

तब तो माहेचमन वहां से उठकर किसी और जङ्गल की तरफ़ रवाना हुई चलते २ पहाड़ और जङ्गलों को तै करतीहुई एक उजाड़ जंगल में जा पहुंची।

जहां कोसों बालू रेत के मैदान पेड़ों का नाम निशान दूर २ तक नज़र न आता था पानी का पता कहीं नहीं कहीं दूर पर ऐसा मालूम होता था कि एक लुकारी आग की ज़मीन से आसमान तक नज़र आई चरते उड़ने वाले जानवरों की शकल तक नज़र नहीं आती ज़मीन आग की तरह गरम है आसमान सुर्ख़ नज़र आता है सूरज मारे आग के स्याही रङ्ग दिखला रहाहै फफोले ज़मीन से उछकर रहजाते हैं पत्थर चटक २ कर उड़े जाते हैं माहे चमन इस हालत को देखकर बेहोश होगई और ज़मीन पर गिरपड़ी बाद कुछ देर के होश आया तो यह शैर ज़बान पर लाई।

॥ शैर ॥

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पै दम निकले।
बहुत निकले दिले अरमान लेकिन फिर भी कम निकले॥
मुहब्बत में नहीं है फ़र्क़ जीने और मरने का।
उसी को देखकर जीते हैं जिसका फिर ये दम निकले॥

बस माहेचमन ने जो इस शैर को ख़तम कर एक तरफ़ को नज़र की तो क्या देखती है कि एक फ़क़ीर बदन पर ख़ाक रमाये सिर पर जटा बढ़ाये एक तकिये के नज़दीक ईश्वरकी याद में ध्यान लगाये हुए है आप उस जगह से उठ उस फ़क़ीरके तकिये पर पहुंची और फ़क़ीर साहब का ईश्वर के याद में ध्यान लगा हुआ देखकर बोलना मुनासिब न समझा चुप हो सामने खड़ी रही बाद कुछ देरके जब फ़क़ीर की आंख खुली तो माहेचमन फुरती से फ़क़ीर के पैरों पर गिरपड़ी फ़क़ीर ने उसे उठा छाती से लगा सामने बिठा लिया और दिलासा देकर कहने लगा बाबा ईश्वर का याद कर तेरा मतलब निकल आयेगा तू अपना हाल मुझसे बयान कर कहां से आई और कहां जायगी ?

यह बात उस फ़क़ीर की सुनकर माहेचमनने अव्वल से आख़ीर तक सारा हाल कह सुनाया तब फ़क़ीर साहब ने कहा अच्छा बाबा मैं तुमको उस नौजवान से मिला दूंगा साफ़ रास्ता बताये देता हूं चली जाना, ले ज़रासी यह भभूत अपने पास रखना यहां से तू दक्खिनकी ओर चली जा आगे चलकर तू एक दीवार ऊँची पायेगी इस ख़ाक को उस दीवार पर डाल देना फ़ौरन वह नीची हो जायगी तू उस पर चढ़कर दूसरी तरफ़ कूदजाना ख़बरदार डरना मत होशियार रहना वहाँ एक नदी मुक़ाबिले समन्दर के बहरही होगी जब तू उसमें कूद पड़ेगी तो तेरे पाँय ज़मीन पर जम जायँगे उस वक़्त तू अपनी आंखें बन्द करलेना, उसी वक़्त शहर के दरवाज़ा पर पहुंच जायगी, बेडर अन्दर शहर के चलीजाना तेरा दिलदार मिल जायगा।

सह बात फ़क़ीर साहब की सुन माहेचमन सलाम कर वहां से चली तो रास्ता दक्खिनी भूल गई और पश्चिम की तरफ़ को रवाना हुई जब चलते चलते कई दिन बीत गये तो इसे सामने एक बुर्ज़ ऊँचा दिखाई दिया

उस पर हरे रङ्गका झण्डा फहरा रहा है यह उससे आंखें लड़ाये चली जाती थी कि क़रीब पहुंची तो क्या देखती है कि उस बुर्ज़ के चारों तरफ़ भूतोंका पहराहै और बीच में एक लाल परी सुर्ख़ पोशाक पहने हाथों में एक रूमाल लपेटे बैठी है यह उसको देखकर चकित होगई और चाहा कि कुछ बात चीत करें कि इतने में एक देव ने कहा कि ऐ नेकबख़्त! तू यहां से भागजा अपने सर पर बला न ले अच्छे भले मौत के मुंह में हाथ न दे नहीं तो तेरी बुरी हालत होगी, तू अपने रास्ते जा।

तेरा रास्ता तो दक्खिन है तू इधर क्यों आई है चल हट पैर फेर यह सखुन उस देव के सुनकर माहेचमन उलटे पैर वहां से लौटी और अपने दिलदार की माला फेरती सितार में तरह तरह की गतें निकालती दर्द की सांसें भरती दक्खिन के तरफ़ चली जब चलते २ कई दिन बीत गये तब वही दीवार बुलन्द दिखाई दी-जब पास पहुंची तो उस फ़क़ीर ने जो भभूत दी थी दीवार पर मारा दीवार नीची होगई और यह उस दीवार पर चढ़कर जो वहां से कूदने का इरादा किया तो कोसों सिवाय पानी

दरिया के और कुछ नज़र न आया यह देख कर घबड़ा गई और मन में विचार करने लगी हाय अब मैं किधर जाऊं मेरे साथ फ़क़ीर ने दग़ा की इस अथाह दरिया में कूदकर क्या मैं ज़िन्दः रह सकती हूं भला यहां पानी में नौजवान का पता कहां यह तो सरासर मौत का दरबार है ऐ झूठा जाली फ़क़ीर! मेरी तेरी क्या दुश्मनी थी जो तूने मुझ बेपर को यह तमाशा दिखलाया इस ऊँची दीवार पर चढ़ाया मैं तो आपही मरी पड़ी थी अब किधर जाऊँ जो उधर कूदती हूं तो दरियाय बेथाह में पड़ती हूं और इधर कूदती हूं तो मरती हूं हाय रे दिल तू किसपर फ़िदा हुआ बैठें बिठाये किस बला में फँस गया हाय रे हाय इश्क़ के मरीज़ का बैद कहां ग़ायब हो गया।

चन्द्रमुखी बोली, कि हे प्यारे अविनाशचन्द्र! तब माहेचमन उस अथाह दरियाको देखकर बहुत घबड़ाई और हिम्मत बांध उसी दीवार पर बैठ गई और अपने दिल्दार के प्रेम में मगन हो सितार बजा गाना गाने लगी।

॥ शैर ॥

तुझे पाऊं कहां ऐ माहेजबीं।

मैंने सारा जङ्गल छानलिया॥
सब राजपाट माला असबाब।
दिलजां तुमपर कुर्बान किया॥
इस वक़्त फ़िराक़ में तेरे सनम्।
हुआ फिरते फिरते नाकमें दम्॥
दो दर्शन अब तो करके रहम्।
मैंने सिदक़ये दीन ईमान किया॥
ये रंजो अलम ग़म का दफ़्तर।
आकरके चढ़ा मेरे सर पर॥
इससे बेकल है दिल मुज़तर।
दो दीदे दवा यह ठान लिया॥

अब हे प्राणप्यारे अविनाशचन्द्र ! माहेचमन इस क़दर गाना गा २ अपने दिलदार के मिलने की आशा लगाये वहां बैठ गई कि इतने में किसी तरफ़ से आवाज़ आई कि चार बजगये मुर्ग़ ने आवाज़ दी, माहेचमन ने सितार बजाना बन्द किया कि फिर किसी जानिबसे आ-वाज़ ऊँची आई कि अरे जोगन यहां बैठी क्या करती है अगर दिल में मुलाक़ात दिलाराम मंज़ूर है तो कूद पड़

यह जो दरिया अथाह है सब तिलिस्म जादू है हिम्मत बांध आंख बन्दकर जल्द कूद नहीं तो आँधी आती है अगर उसमें फँसगई तो दिक़्क़त उठायेगी और पछतायेगी। —यह आवाज़ ऊँची आकाशबानी से सुनकर एकदम आँखें मीच हिम्मत बाँध माहेचमन उस दरिया में कूद पड़ी ज्यों पाँव ज़मीन से जाकर लगे त्योंही उसने एक शहर बहुत अच्छा लम्बा चौड़ा देखा।

इतना सुन अविनाशचन्द्र कहने लगा कि हे प्राण-प्यारी! अब रात बहुत गई है न मालूम अभी आपकी यह कहानी कितनी बाक़ी है आप भी सोने की जगह जाकर आराम कीजिये और मुझे छुट्टी दीजिये मैं कल फिर आ-ऊँगा और आपका बाक़ी क़िस्सा कल सुनूंगा, इतना कह अविनाशचन्द्र चन्द्रमुखीसे छुट्टी पाकर अपने घरकी तरफ़ रवाना हुआ और चन्द्रमुखी ने अपनी टहलनियों को बुलाया, उन्होंने आतेही कमरे में पलँग बिछा दिया और चन्द्रमुखी उसपर आराम करनेलगी, मगर इसको चैन कहाँ बतौर मछली के इधर उधर तड़फने लगी, मन में बिचार करती थी कि कब सबेराहो और कब शाम आये, जिसमें मैं

अविनाशचन्द्र का दर्शनकर चकोररूपी नयनोंको सुखदूं।

इसी शोच बिचार में जुदाई की रातने कूच किया और सबेरे सूर्य आसमान की गश्त करने के वास्ते उदय हुआ चन्द्रमुखीने ज्यों त्यों कर बड़ी मुश्किल से दिन बिताया कि शाम का वक़्त नज़र आया ठंढी २ हवा चलने लगी चन्द्रमुखी अपनी छत पर बैठ अविनाशचन्द्र की राह ताकनेलगी, कि इतने में अविनाशचन्द्र आया और दरवाज़े की ज़ंजीर हिलादी, आवाज़ पातेही दासी झट सिकरी खोलकर अविनाशचन्द्र को मकानके भीतर लिवा लेगई चन्द्रमुखी ने बआदाब प्राणप्यारे को कुरसी दी और कहा सरकार! आपकी जुदाई मुझसे सही नहीं जाती आप तो अपने मकान को चले जाते हैं और मुझे आपके विना यहां कुछ नहीं सुहाता।

यह बात उस चन्द्रमुखी की सुनकर यह कहने लगा कि हे प्यारी! मैं तो पहले कहचुका हूं कि प्रेम बहुत बुरा जाल है परमेश्वर न करे जो कोई इस ख़राब जाल में फँसे और इसी वास्ते मैंने आपसे यह कहानियों का झगड़ा डाला है कि इससे शायद आप अब भी समझें और इस

मुहब्बत के जाल में न फँसें वरना इसमें बड़ी तकलीफ़ है अब आप मेहरबानी कर कल की दास्तान पहले ख़तम कीजिये नहीं तो बातों ही बातों में रात बीत जायगी।

चन्द्रमुखी ने कहा सुनिये जब माहेचमन भीतर शहर के गई तो क्या देखती है कि शहर आबाद है दोनों तरफ़ दूकानें हर क़िस्म की खुली हुई हैं भिश्ती शहरकोट पर पानी छिड़करहे हैं तमाशबीनों का गश्त लगरहा है रंडियां अपने २ कमरे में तमाम सजावट से कुरसियों पर बैठी अपनी भाव दिखा रही हैं बाज़ार में पैकार हर क़िस्म की चीज़ें हाथ में लिये खड़े हैं किसी मुक़ाम पर दल्लालों की भीड़ है तमाम बाज़ारों में माली छड़ियों में माला लगाये आवाज़ लगाते हैं जिधर ही माली निकलता है मारे ख़ुशबूके दिमाग़ तर होजाताहै दूकानदारके दूकान पर तोते के पिंजरे टँगे हैं क्या आदमी और क्या जानवर सब ईश्वर की राह पर कमर बाँधे तैयार हैं भूखों को खाना बँट रहा है नङ्गों को कपड़े मिलते हैं भीतर शहर के सब तरह ईश्वर की कृपा से आराम है नर नारी मगन हैं इस भांति माहेचमन तमाम बाज़ार की सैर करती हुई अगाड़ी

चली तो क्या देखती है कि फाटक बहुत ऊँचा बना है और दरवाज़ा आम खुला है जिसके दोनों तरफ़ सङ्ग-मरमर की दीवार खिंची है शहर के लोग जाते आते हैं यह भी उस फाटक के अन्दर गई, वहां क्या देखती है कि एक निहायत ख़ूबसूरत नज़रबाग़ अपनी छटा से निराला बना है बीच में एक हौज़ से फुहारा जारी है तालाब में मछलियां लहरा रही हैं क्यारी २ में फूल फूलरहे हैं कहीं कहीं टट्टियों पर बेलों ने सावन की घटा मात कररक्खी है सामने सैकड़ों महल सोने चांदी के बने हैं हज़ारों बाग़ चौतरफ़ा नये २ क़िता के तैयार हैं यह तमाम बाग़ की सैर करती हुई एक मौसरी की छाया में बैठ गई नींद का नशा आया तो सोगई।

चन्द्रमुखी कहने लगी कि देखिये साहेब माहेचमन प्रेम में किस क़द्र फँसी है कि जिसको सिवाय उस नौजवान के किसीका कुछ भी ख़याल तक नहीं जब माहेचमनकी आंख खुली तो ठंढी सांस लेकर आह भरने लगी कि इतनेमें वही सौदागर जो नावपर मछलीका शि-कार करता नज़र पड़ा था देखा।

चन्द्रमुखी कहने लगी कि हे प्यारे ! जो इन दोनों की चार आंखें हुईं तो आपस में एक दूसरे को देख फूला न समाया और माहेचमन को तो प्रेम ने ऐसा दबाया कि मुँह से कुछ न कहसकी मुर्दासी बेहोश हो ज़मीन पर गिरपड़ी वह सौदागर इसकी हालत देखकर झट दौड़ा एक बार गले से लिपट गया बार बार मुख चूम २ प्यार करने लगा और मन में बिचारने लगा कि ग़ज़ब हुआ इसने बड़ी बलायें झेली हैं मारे दुख दर्द और भूख प्यास के तमाम बदन जिससे चांद शरमाता था वह आज बिगड़ गया जुगुनुओं की चद्द बनी अब जिस शख़्सने मेरे वास्ते ऐसा दुख दर्द उठाया है और प्रेमकी गली में पैर रखकर अपना यह फ़क़ीरी हाल बनाया है उसे मैं भी अपने दिल में जगह दूं।

चन्द्रमुखी कहनेलगी कि हे प्यारे ! जब सौदागर इस भांति मनमें बिचारने लगा कि इतने में माहेचमन की आंख खुलगई तो पास में सौदागर को बैठा देख एक दम चरनों पर गिरपड़ी सौदागर उसको वहां से लेगया और एक अच्छे मकान में जो ख़ाली पड़ा था टिका दिया और

दो चार लौंड़ियां वास्ते सेवा के मुक़र्रर कर दिया तब तो माहेचमन के दिन बड़े ऐश व आराम से कटने लगे दोनों में दिन ब दिन प्रेम बढ़ने लगा यहां तक कि एक के बिना देखे दूसरे को घड़ी भर चैन नहीं पड़ता। —

एक दिन का ज़िकर है कि सौदागर को कहीं दूर दूसरे शहर में जाने की ज़रूरत पड़ी जिसके सबब से वह बहुत सुस्त होकर महल्ल में आ बैठा इसे उदास देखकर माहेचमन ने अर्ज़ किया कि ऐ माहरू महाशय ! आज आपका दिल उदास कैसे है ? आप अपने दिल का हाल मेरे सामने कहिये जहां तक हो सकेगा मैं उसमें मदद दूंगी यह बातें माहेचमनकी सुनकर माहरू सौदागर ने जवाब दिया, कि हे प्यारी ! कल्ल मुझे शहर जाफ़ीन को जांना है वहां पर मेरा जहाज़ अटका है। अगर नहीं जाताहूं तो बहुत नुक़्सान होता है और जाता हूं तो आप बिन मुझे एक घड़ी चैन नहीं आती कहो अब क्या करूं यह बात माहरू सौदागर की सुनकर माहेचमन ने कहा कि हे प्यारे ! आप इतना परेशान क्यों होते हैं मैं भी आपके साथ चलूंगी क्योंकि मुझे भी आपके बग़ैर

एक घड़ी मानो साल के गुज़रती है तबीयत हरदम बेकल रहा करती है आंपको देखलेतीहूं तो बदन में जान लौट आतीहै जब इस क़दर माहेचमन ने कहा तब तो माहरू सौदागरने जान लिया कि यहभी मेरे बग़ैर अकेली कभी न रहैगी इससे इसको साथ ले चलना ही बेहतर है यह मन में बिचार माहेचमन को साथ ले शहर जाफ़ीन को रवाना हुआ और कई मंज़िल तैकर शहर जाफ़ीन में जा दाख़िल हुआ और वहां पर अपने जहाज़वालों से जाकर मिला और वहां पर उन लोगों से अपना हिसाब किताब समझकर कुछ दिन तक वहीं ऐश आरामसे रहनेलगा, और बाद कुछ दिनके माहेचमन को जहाज़ पर सवार कराके वहां से चलदिया जब कुछ दूर निकल आया तो माहरू सौदागर ने मन में बिचार किया कि मैंने सब कुटुम्ब के लोगों से इसके पीछे बुराई ली और सब शहर में बदनाम हुआ इससे अब इसको यहां समन्दर में डालदें तो अच्छा हो यह यहां से न ज़िन्दा बचेगी और न फिर मेरे पास आवेगी यह बात मनमें बिचार कर माहेचमन को चलते जहाज़ से समन्दर में डाल दिया और

आप अपने घर में आ ऐशो आराम से रहनेलगा

तब चन्द्रमुखी कहने लगी कि हे अविनाशचन्द्र! देखो माहेचमन ने किस क़दर दुःख उठाये कि जिसकी ख़ातिर बन २ की धूल छानी अपना घर दर छोड़ सब से मुख मोड़ राजसी कपड़ा उतार तन बदन में राख मल जोगिया भेष बना मारी मारी फिरती बाद बहुत दिनों के इसका यह फल मिला। भला आपही कहिये कि मर्दों के बराबर बेपीर कौन होगा आप तो स्त्रियोंही को दोष देते हैं अब इसमें किसको बेमुरव्वत कहना चाहिये तब अविनाशचन्द्र कहनेलगा, कि हे प्यारी! यहतो आपने सचकहा मगर स्त्रियां ही ज़्यादा बेमुरव्वत निकलेंगी क्योंकि मसल मशहूर है।

॥ दोहा ॥

तिरिया चरित अपार है, जानि सकै ना कोय।
निज कर पहिले मारिपति, पाछे सत्ती होय॥

और भी बहुत सी कहावत प्रसिद्ध हैं मैं अभी आप को एक क़िस्सा गुलबदन का सुनाता हूं अभी आप ध्यान देकर सुनिये कि हिन्दुस्तान में फ़ीमानपुर नाम शहर निहायत उमदा था उसमें सब ग़रीब अमीर हिलं मिल

कर आपस में भाई बन्धु के समान रहते थे राजा का राज इस क़दर था कि शेर बकरी एक घाट पानी पीते थे चोर ज्वारी डाकू व छिनरे नाम निशान को न थे किसी को देख कर जलना मानो उस शहर से उठ गया था महाराज के दया नज़र से सब तरफ़ सुख आराम था कोई किसी तरह दुःखी न था एक दिन का ज़िक्र है कि उस शहर के सेठ के घर एक फ़क़ीर आया और आकर सेठ से सवाल किया कि बाबा आज हमको भोजन की इच्छा है अगर भगवान् के नाम पर दे तो अच्छा है सेठ ने जवाब दिया जो हुकुम आप मकान पर चलिये जो कुछ भोजन हाज़िर है खाइये।

यह कह सेठ उस फ़क़ीर को अपने घर लेगया और वहां जाकर बड़ी ख़ातिर के साथ फ़क़ीर साहब की दावत की जब फ़क़ीर भोजन कर चुका तब आशीरबाद दिया कि तेरे लड़के बाले खुश रहें।

यह बात फ़क़ीर साहब की सुन कर सेठ ने हाथ जोड़कर अर्ज़ की कि महाराज मेरे लड़के बाले तो नाम निशान को भी नहीं हैं ख़ुश कौन रहेगा तब फ़क़ीर साहब

महाराज आपके चरणों की कृपा से यह लड़का हुआ है आप त्रिकाल से भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों समय का हाल जानते हैं अपनी बुद्धिबल से कुछ इस लड़के के ग्रह मुहूरत कहिये।

यह बात सेठ साहेब की सुनकर पण्डितजी ने कहा सुनो यह तुम्हारा लड़का बड़ा भाग्यवान् और सुखी होगा और इसके नसीब में विद्या भी बहुत है मगर एक बात का ख़्याल रहै कि इसको अठारह बरस तक दक्खिन दिशा को न जाने देना उधर जाने में इसकी जान का ख़तरा है जो कुछ देखा कह सुनाया अब करना तुम्हारे हाथ है यह बचन पण्डितजी से सुनकर सेठ ने बीस अशरफ़ी और एक बेश क़ीमत सिरोपा दे पण्डित को बिदा किया।

अविनाशचन्द्र कहने लगा कि हे प्यारी! बाद कुछ दिन के जब वह लड़का स्याना हुआ और उसका नामकरण हुआ तो पण्डितोंने उसका नाम गुलाबचन्द रक्खा जब गुलाबचन्द पढ़ लिखकर होशियार हुआ तो अपने पिता से कहने लगा कि मुझको परदेश जाने की आज्ञा

दीजिये तब सेठ ने कहा बेटा अभी तुम बालक परदेश जाकर क्या करोगे जब बड़े होजाओ दिनरात परदेश में रहना कोई मना करनेवाला नहीं है यह बात अपने पिता की सुनकर वह चुप होगया और अपनी दूकान पर काम काज करने लगा।

एक दिन की बात है कि इसका मित्र एक राजमन्त्री का लड़का था वह शामके वक़्त इसके पास आकर कहने लगा कि लो यार आज हम अपनी सुसराल को जांयगे आपको भी हमारे साथ ज़रूरही चलना होगा।

गुलाबचन्द ने यह वचन मन्त्रीपुत्र का सुनकर कहा बहुत अच्छा मैं आपके साथ चलूंगा यह अपने बापसे आज्ञा ले मन्त्रीपुत्र के साथ घोड़ेपर सवार हो चलदिया।

जब चलते २ कई दिन बीत गये तो एक बाग़ जो रास्ते में दिखाई दिया तो दोनों उस बाग़ के भीतर गये और एक पेड़ के तले घोड़ों की जीन बिछाकर बैठ गये और घोड़ा को एक हरी घास के मैदान में छोड़दिया वहां की ठंढी २ हवा जो इन दोनों को लगी तो नींद का नशा आया और दोनों बेहोश होकर सोगये बाद कुछ देर के

आंख खुली तो दोनों दोस्त एक सरोवर पर पहुंचे और हाथ मुँह धो पानी पी घोड़ों पर सवार हो अपनी सुसराल को चले जब दो तीन दिन के बाद यह अपनी सुसराल के शहर में पहुंचे तो गुलाबचन्द एक बाग़ में ठहरगया और मन्त्रीपुत्र अपनी सुसरालमें दाख़िल हुआ।

अविनाशचन्द्र कहने लगा कि हे प्यारी! अब रात बहुत गई मुझे आप छुट्टी दीजिये मैं कल आऊंगा जब आपको अगाड़ी की कहानी सुनाऊंगा।

अब अगाड़ी गुलाबचन्द को सैर जंगल की करना और रास्ता भूल कर यात्रा दक्खिन में पैर धरना वहाँ इन्द्र परी के प्रेमजाल में फँस कर मुसीबतें उठाना और मन्त्रीपुत्र का यारके ढूँढने में जङ्गल दर जङ्गल फिरना और बाद मिलने के गुलाबचन्द को समझाना व मन्त्रीपुत्र का मारा जाना इस क़िस्से के चौथे भागमें दिखलाया जायगा।

इति श्रीक़िस्सा सादेतीनयार का तीसराभाग समाप्त॥

* श्रीगणेशाय नमः *

॥ क़िस्सा साढ़ेतीनयार का ॥

चौथा भाग ॥

जब सूरज छिपा और चांद निकला तो सितारों ने आसमान को छालिया और अँधेरी रात ने अपना मुंह छिपालिया बाग़ों में उड़नेवाले जानवरों ने शोर मचाना शुरू किया बहार की ख़ुशी सुनकर सारे फूल खिलखिलानेलगे सबेरे की हवा चलने लगी चौतरफ़ चांदनी नज़र आने लगी कि अविनाशचन्द्र अपनी दूकानके काम काज से छुट्टी हो अपनी प्राणप्यारी की मुलाक़ात को चला। जब महल के दरवाज़े पर पहुँचा तो ज़ंजीर खड़काई कि चन्द्रमुखी की दासी उसे भीतर मकानके लिवा ले गई, चन्द्रमुखी उसे देखतेही बहुत ख़ुश हुई और कहने लगी, कि अय प्यारे! आपको परमेश्वर आरोग्य रक्खें आपकी उमर बड़ी हो मुझ पर आपने ऐसा क्या जादू डाला है

कि मुझे खाना, पीना, सोना और बैठना कुछ नहीं सुहाता दिन को चैन नहीं रातको नींद तो क्या आंखों में नशा तक नहीं आती मछली के तरह कभी इस करवट कभी उस करवट पड़ी छटपटाया करती हू ।

॥ ग़ज़ल ॥

बाइसे वहशत हुई बे एतनाई आपकी ।
तिनके चुनवाने लगी हमसे जुदाई आपकी ॥
आपकी जाने बला क्योंकर कटी फुरक़त की रात ।
दिल तड़पता रहगया जब याद आई आपकी ॥
आपकी बातों का रहता है मुझे हरदम ख़याल ।
जो कोई बोला सदा कानों में आई आपकी ॥
करवटें शबभर लिया करती हूं नींद आती नहीं ।
रात भर बेताब रखती है जुदाई आपकी ॥ १ ॥

अय प्यारे! अब आप मेरे दिलका मतलब पूरा कीजिये दासी दिलोजान से ताबेदार है कभी किसी तरह का उज़्र न करेगी ज़ियादह बीमार मुहब्बत को तड़पाना ठीक नहीं आप सच समझिये किसी दिन आपके पैरों में तरसते हुए सांस निकल जायगी। दुःख दर्द पल २ का अच्छा नहीं

होता, रात भर आपकी यादगारी में आंखों से मोती पिरोया करती हूं, इस दिल को बहुतेरा समझाती हूं यह बेदर्द नहीं मानता मेरे इस गिड़गिड़ाने पर प्यारे ! दया कीजिये और जो आप यह ख़्याल करते हैं कि कहानियों में हार जीत करें तो प्राणप्यारे! मैं भी कहानियोंकी खान भरे बैठी हूं और आप भी कहानियों का समुन्दर बांधे तैयार हैं। मगर क्या कीजिये हमारा और आपका यह झगड़ा कभी बरसों में तै न होगा दूसरे क़िस्सा कहना तो दूर रहा मुझ में इतनी भी ताक़त नहीं कि आपका क़िस्सा घण्टे आध घण्टे बैठकर सुनूं।

यह बातें चन्द्रमुखी की सुनकर अविनाशचन्द्र कहने लगा कि चन्द्रमुखी आप अभी घबड़ा गईं मैंने आपको कितना समझाया मगर आपने कुछ ख़याल न किया आप फिर भी समझिये और इस प्रेमजाल में अपना दिल न फँसाइये वरना अभी कुछ नहीं बिगड़ा है यह बेदर्द आप को बहुत से खेल खेलायेगा जङ्गल दर जङ्गल मैदान में फिरायेगा पहाड़ों में घुमायेगा फ़क़ीरी भेष बनायेगा दुःख और रञ्ज से कलेजा चाक करायेगा क्योंकि मैंने जिसको

सुना वह फँसने को तो फँसगया मगर जीते जी निकल न सका देखो क्या आपने फ़रहाद का हाल नहीं सुना ? क्या क़िस्सा मछली मारनेवाले का कभी कान से नहीं सुना ?

चन्द्रमुखी कहने लगी, अय प्यारे ! हीर रांझे का क़िस्सा तो मैं खूब जानती हूं मगर मछली पकड़नेवाले की कहानी मैंने आजतक किसी की ज़ुबानी नहीं सुनी पहले आप वही क़िस्सा मछली पकड़नेवाले का सुनाइये।

अविनाशचन्द्र कहने लगा कि प्यारी ! अगर मछली पकड़नेवाले की कहानी मैं इस वक़्त आपके सामने शुरू करता हूं, तो पहली कहानी जो बाक़ी है उसका मज़ा हासिल न होगा मौक़े २ पर कहानी कही जाती है पहले आप इस कहानी को सुन लीजिये, अबकी बारी मछली पकड़नेवाले की कहानी सुनाऊंगा ॥

॥ आरम्भ कहानी ॥

अयि प्यारी ! जिस दम मन्त्रीपुत्र अपनी सुसराल में चला गया, और गुलाबचन्द बाग़ के भीतर गया तो टहल रहा था, और बाग़ की शोभा देख कर मन में खुश होता था क्यारी २ में फूल फूलरहे हैं और जुदे २ अपने २

रङ्ग को दिखारहे हैं किसी क्यारी में गुलाब महक रहा है दूरतक चमेली खिलती चली गई है किसी मैदान में गुलाबांस अपनी खूबसूरती दिखारहा है एक तरफ़ क्यारी में नरगिस जमा हुआ बाग़ २ होरहा है गुलाबचन्द को आता देख कर सब जानवर अपनी २ मीठी २ आवाज़ से भांति २ की बोलियां बोल हाज़िरी बजा रहे हैं मोर मोरिनी नाच दिखा रही हैं।

इस भांति बाग़ की सैर करता गुलाबचन्द वहां गया जहां एक तालाब में रङ्ग बरङ्ग के फुहारे चल रहे थे कि इतने में दश बजगया जङ्गल सनसनाने लगा और एकबार किसी तरफ़ से रोने की आवाज़ आई यह बिचारा चौंक पड़ा और मन में बिचार करने लगा कि इस आवाज़ से ज़ाहिर होता है कि कोई आशिक़ दुखिया जुदाई के ज्वर से घायल है या किसी का जवान लड़का इस जहान से स्वर्गबास कर गयां है और यह उसके रञ्ज से बेहाल है या किसी ज़बरदस्त ने किसी ग़रीब बेचारे पर जुल्म की तलवार चला दिया है किसी डाकू ने किसी मुसाफ़िर को लूट लिया है न मालूम क्या बात है।

अविनाशचन्द्र कहने लगा कि सुनो प्यारी! जिस वक़्त यह आवाज़ गुलाबचन्द ने सुनी तो एकदम दिल टुकड़े २ होगया आंखों से पानी मानो मोती से टपकने लगे तमाम बदन थर २ कांपने लगा तब तो यह घबड़ा कर बेक़रार हो उठा और बाग़ से बाहर निकल चारों तरफ़ देखने लगा कि एकबारगी गुलाबचन्द की नज़र एक तरफ़ जा पड़ी देखा तो एक जवान निहायत ख़ूबसूरत उम्र चौदह व पन्द्रह वर्ष का याद उलफ़त में मस्त नरगिसी चश्म बीमार किसी माशूक़ की जुल्फ़े अदा का डँसा नीचा शिर किये पड़ा २ आहकी लम्बी २ सांस भररहा है और आंखों से आंसू का दरिया बहारहा है ।

अविनाशचन्द्र कहने लगा कि अयि प्यारी! ऐसा बुरा उसका हाल देख गुलाबचन्द ने बेक़रार होकर अपना कलेजा थामलिया और वहां बैठ अपने जेबसे रेशमी रूमाल निकाल उसका मुंह पोंछने लंगा और अपने जंघे पर शिर रखकर अँगरखे के दामन से उसपर हवा करने लगा और कहने लगा कि अयि हमारे आंख की रोशनी! ईश्वर के वास्ते शिर को उठाओ और मुझ बेचैन को

अपने हाल से वाक़िफ़ करो आपका यह हाल देखकर मेरा दिल टुकड़े २ होताहै।

॥ शैर ॥

सदमा ये दिलपर आपके क्योंकर सवारहै।
जिससे यह हाल आपका इस दम बेज़ारहै॥
फन्दे में आ फँसे हो किसी माहेलक़ा के।
चश्मों से अश्क इससे बहै बेशुमार है॥
या लुटगया है माल कहीं आपका बसन्त।
जिसका कि रञ्ज आपको इस दम अपारहै॥

यह शैर गुलाबचन्द का सुनकर वह जवान चुप हो गया और बाद जब कुछ देर के होश आया तो शिर उठा कर लहने लगा।

॥ दोहा ॥

हाल दर्दये दिल मेरा, कौन सुनै है यार।
उस दिलबरके दीद बिन, हूं इस दम बेज़ार॥

यह दोहा उस जवान का सुनकर गुलाबचन्दने कहा अय साहेब! ज़रा होश में आओ ऐसी बेढँगी बातें बनाना अच्छा नहीं।

अविनाशचन्द्र कहने लगा, कि हे चन्द्रमुखी ! ज
गुलाबचन्द ने इस तरह—उस जवान को समझाया त
वह यह ग़ज़ल कहने लगा ।

॥ ग़ज़ल ॥

तोड़कर सीना हमारा दिले मुज़तर तोड़ा ।
निगाहे यार ने बरछी के बराबर तोड़ा ॥
यार ने आके मेरी लाश पै ज़ेवर तोड़ा ।
बांधा तार आंसुओंका रिश्तये गौहर तोड़ा ॥
जरसे मतलब नहीं मुझ मस्तको ऐ संगदिल ।
देखले रखके बुते मी के बराबर तोड़ा ॥
कहकशां मांगहै मुंह चांदहै खाल अख़तरहै ।
हाला है तीर गले में महे अनवर तोड़ा ॥
सरज़मी कूंचए जाना की छुड़ाई मुझ से ।
आसमां ग़मका फ़लकने मेरे सरपर तोड़ा ॥
न पढ़ा यार ने अहवाल सिकस्ते मेरा ।
ख़त के पुरजे किए बाज़ूए कबूतर तोड़ा ॥
देखनेवालोंके मैहफ़िलमें न क्यों दिल टूटे ।
रक्स में ले जो वह रक्क़ास सितमगर तोड़ा ॥

यह शैर उस जवानने पढ़ा और निहायत बेक़रार होकर एक आह सर्द की और ज़मीन पर गिरपड़ा वहां गुलाबचन्द इसकी हालत देख घबड़ागया और दिल में सोच बिचार करनेलगा कि यह किस तरह बाग़ तक पहुंच सक्ता है अगर यह उठकर मेरे साथ चले तो इसको धीरज दूं।

अविनाशचन्द्र कहने लगा, कि हे प्यारी! गुलाबचन्द इस तरह मन में मसौदा कर रहा था कि वह जवान दम बदम आह की लम्बी २ सांसें भरने लगा और यह ग़ज़ल अपनी ज़बान पर लाया।

॥ ग़ज़ल ॥

याद आता है परी नाज़ से आना तेरा।
मुंह को शरमाके दुशाले में छिपाना तेरा॥
आंखें नीची किये शरमाये हुए मुंह फेरे।
मुसकुरा कर गिलौरी का चबाना तेरा॥
नक़्शहै दिलपै मेरे आज तलक ऐ ज़ालिम।
सबकी नज़रोंको बचा आंख लड़ाना तेरा॥
सांपसा लोटता है छातीपै जब आता है याद।
बिगड़ी ज़ुल्फ़ोंको वह हरबार बनाना तेरा॥

जाने जाँ याद है वस्ल की शब मुझको अभी।
मिन्नतें करना मेरा मुंह का छिपाना तेरा॥
एक एक चीज़को मैं याद किया करता हूं।
कभी चोटी कभी गरदन कभी सीना तेरा॥
मिन्नतें मानियां दरगाहों में चिल्ले बांधे।
पर मुयस्सर न हुआ साथ सुलाना तेरा॥
कहियो ये बादे सबा मरता है आशिक़ तेरा।
कूचए यार में गर हो कभी जाना तेरा॥
कितना समझाया समझता नहीं तू ऐ ज़ालिम।
दिले बेताब यही है जो सताना तेरा॥
देखकर कूंचेमें अपने मुझे बोला वह शोख़।
नहीं कम्बख़्त कहीं और ठिकाना तेरा॥
जब मैं रोता हूं तो हँसकर वह फ़रमाते हैं।
आंखें फोड़ेगा अबस अश्क़ बहाना तेरा॥
दिले बेताब घड़ीभर तो मुझे सोने दे।
क़हर है रोज़ का रातों को जगाना तेरा॥

अविनाशचन्द्र कहने लगा, कि हे चन्द्रमुखी! यह बात उस जवान की ज़ुबानी सुनकर गुलाबचन्द पहिंचान

गया कि शायद इस जवान पर हज़रत इश्क़ का साया है हज़रत इश्क़ ने ही इसे दरवाज़े २ फिराया है मुझे यक़ीन होता है कि जब तक इसके दिल की चुरानेवाली इसे न मिलेगी इसका जीना मुहाल है।

यह ख़याल दिल में कर गुलाबचन्द कहनेलगा कि अय प्रेम के मतवाले! उठ मेरे साथ बाग़ को चल वहां तालाब में हाथ मुंह धो बग़ीचेकी सैर कर इत्र की खुशबू मग़ज़ में बसा ईश्वर चाहेगा तो तेरा प्रेमीभी तुझसे मिलजायगा।

यह बात गुलाबचन्द की सुन कर वह जवान यह ग़ज़ल कहने लगा।

॥ ग़ज़ल ॥

झुकाए बैठे हैं देर से सर,
लगाओ ख़ंजर का वार जाना।
कि तां निकलजाय मेरे दिलसे,
अभी ये ग़मका गुबार जाना॥
असीर रञ्जो बला हुआ हूं,
तुम्हारे कूंचे में आपड़ा हूं।
मैं दिल तो पहलेही दे चुका हूं,

यह मेरे तनसे लो तार जाना।
मकां नहीं है मैं लामकां हूं,
यहीं मकां है कि मैं जहां हूं।
बताऊं कैसे कि मैं कहां हूं,
है दिलपर वहशत सवार जाना॥
सितम २ में अलम अलम में,
बनाये दम एक हवाये ग़म में।
तुम्हारी आंखों ने एक दम में,
कियाहै दिलका शिकार जाना।
पड़ा हूं मुज़तर है चश्म पुरनम,
जुदा है अब तो शफ़ीक़ हमदम।
बला ओ रञ्जो मुसीबतो ग़म,
हुए हैं दुशमन हज़ार जाना॥

आख़िर को वह जवान घबड़ाया हुआ गुलाबचन्द के साथ बाग़ में आया और एक पेड़ के तले बैठ कर यह ग़ज़ल पढ़ने लगा।

॥ ग़ज़ल ॥

क्या कहूं दिल माइले ज़ुल्फ़े दुता क्योंकर हुआ।

यह भला चङ्गा गिरफ़तारे बला क्योंकर हुआ॥
उसको यकताई का दावा था जो देखा आइना।
होगया हैरां कि पैदा दूसरा क्योंकर हुआ॥
जो न होना था हुआ हमपर तुम्हारे इश्क़ में।
तुमने इतना भी न पूछा क्या हुआ क्योंकर हुआ॥
दीदए हैरां हमारा था तुम्हारे ज़ेर था।
मुझको हैरत है कि पैदा नक़्श पा क्योंकर हुआ॥
नामेवर ख़त दे के उस नौख़त से तूने क्या कहा।
क्या ख़ता तुझसे हुई और वह ख़फ़ा क्योंकर हुआ॥
जिसको महरावे इबादत हो ख़मे अबरूए यार।
उसका कावे में कहो सिजदा अदा क्योंकर हुआ॥

हे चन्द्रमुखी! जब वह जवान यह ग़ज़ल पढ़चुका तब कहने लगा कि अय मेरे दोस्त! मेरे दुःखकी कहानी हर एक को दीवाना बनायेगी माशूक़ के गलीकी ख़ाक छनवायेगी हाय मैं जिसकी उल्फ़त में दर बदर जङ्गल पहाड़ी की मुद्दत से धूल छानता फिरा उस गुल को मेरे मिलनेसे नफ़रत रही अफ़सोस सद अफ़सोस हज़ार अफ़-सोस उस चन्द्रबदनी को कहां पाऊं या उसकी फ़िराक़

में सर टकरा कर मर जाऊं हायरे कम्बख़्त दिल! कि
संगीन फ़ौलाद ऐसे दिल पर आशिक़ हुआ, भला च
बैठे बिठाये किस आफ़त में फँस गया। अजी मेहरबा
करने वाले मेरे मेहरबान महाशय इश्क़! अब तो मेरे इ
हाले ज़ार पर दया कीजिये भगवान् के वास्ते मुझ
मेरे महबूब की दुबारा शक्ल दिखलाइये।

यह कह वह जवान एक आह दर्द भरी हुई सां
खींचकर बेहोश होगया मगर उसकी आह पुर तासीर
हरएक के दिल को हिला दिया ज़ायक़ा प्रेम हरएक क
चखा दिया गुलाबचन्द बेक़रार हो उठा और उस जवा
को अपने गले से लगा लिया गुलाब की शीशी मँगाक
उसके चेहरे रोशनपर छिड़का मगर होश कहां था
महाशय इश्क़ ने पहलेही से ज़ुबान को बन्द करके दि
को मरोरकर अपने रञ्ज व ग़म व-जुदाई की फ़ौज में
पकड़ लिया था।

गुलाबचन्द ने उसका यह हाल देख माली को हुक्म
दिया कि एक पलँग सन्दली बिछाओ और उसपर उम्द
चाँदनी लगाओ शीशे गुलाब से महक करदो और इस

वान को उस जगह लिटाकर टट्टियां ख़स की लगादो
बरदार किसी तरह की तकलीफ़ न होने पावे जिस वक़्
सको होश आयेगा अपना क़िस्सा आप सुनावेगा।
बस वहां क्या देर थी माली तो हुक्म का पाबन्द था
सा कहागया उसने वैसाही किया क़रीब दश बजे रात के
ब तरी का वक़् आया उस जवान को होश हुआ माली
गुलाबचन्द से अर्ज़ किया कि सरकार! बीमार मुहब्बत
स वक़् होश में है गुलाबचन्द वहां से उठ उस कमरे
गया और वहां जाकर उस जवान को उठाया हाथ मुँह
ला अपने साथ एक जुदे थाल में खाना खिलवाया
ौर आपने भी खाना खाया उस वक़् जो उस माशूक़
पीर की याद आई तो वह बेइख़्तियार आंखों में आंसू
र यह ग़ज़ल कहने लगा।

॥ ग़ज़ल ॥

किसने सोते में आकर जिलवये,
नक़ाब उठाकर दिखा दिया है।
फ़िराक़े रञ्जो अलम का सदमा,
जिगर पै मेरे जमा दिया है॥

न छेड़ मुझको तू आह साक़ी,
कि दम नहीं अब रहा है बाक़ी।
शराबे उल्फ़त का जाम जाना,
ने आज भर कर पिला दिया है॥
बुरा समझते थे इश्क़ पहले,
नशा में फिरते थे हम अकेले।
सो इश्क़-हज़रत ने आन हमको,
मज़ा ये उल्फ़त चखा दिया है॥
पड़ा है दिन रात खूँ बहाना,
सुनायें ग़म का किसे फ़िसाना।
तपे जुदाई ने तेरे जाना,
शमे के मानिन्द जलादिया है॥
न देर कीजेगा जल्द आओ,
तड़प रहा हूं न राह दिखाओ।
लगाओ ख़ंजर का वार मुज़तर,
ने सरको पहले झुका दिया है॥

उस जवान की ज़ुबान से यह ग़ज़ल सुनकर गुलाब-
चन्द एकदम चीख़ मारकर रोनेलगा और इसका यह

न सह सका अलग़रज़ दोनों वहीं लेटगये महाशय ने और भी जुदाई की आग बदन में भड़का दी इसी रसे में मन्त्रीपुत्र बतौर सैर के बाग़ में आ निकला वहां और ही रङ्ग नज़र आया देखा दोनों प्रेम के मतवाले आपस में लेटे २ रोरहे हैं।

मन्त्रीपुत्र पास आया और धीरज देकर कहने लगा अय दीवानो ! अपनी जान क्यों हलाकान करते हौ ? परमात्मा को दिल में याद करो तुम्हारा दिलबर तुम्हें मिलेगा कोई रास्ता वह ईश्वर बतायेगा।

आख़िरकार मन्त्रीपुत्र ने बहुत कुछ समझाया मगर महाशय प्रेम की समझ में कुछ न आया वह जवान अपने माशूक़ को याद करके रोताही रहा।

इतने में शाम हुई चांद निकला और सूरज छिपगया आसमान पर सन्नाटा होगया कलियां छिटक २ कर फूल होगईं बहारोंपर रङ्ग आगया क्यारियों में अजब बहार आने लगी हरी २ घास छोटी उमरवाली क्या प्यारी लगती थी ठंढी हवा अपनी अदा से नाजुक़पन दिखलाती थी कहीं चिड़ियां चहचहा रहीथीं कहीं तोते

कहीं कबूतर अपनी २ बोलियां बोल रहे थे और उ
आशिक़ों के दिल में दुःख की आग को भड़काते थे
अविनाशचन्द्र कहने लगा कि अयि प्यारी ! ज
रात हुई तो मन्त्रीपुत्र ने दोनों को उठाया और पूछा कि
अय जवान ! आप ऐसा परेशान क्यों होते हैं, आप अ
पना क़िस्सा मुझे सुनाइये किसके लिये आपको इतन
दुःख व दर्द है यह बातें मन्त्रीपुत्र की सुनकर वह ज
वान कहने लगा।

॥ शैर ॥

क़िस्सा नहीं है ग़म का सरासर है नास्तां।
किस तरह पै कीजिये ग़में फ़ुरक़तका अब बयां॥
दाग़ों ने कर दिया है कलेजा को बोस्तां।
फ़ुरक़त में हूं किसी गुलेराना का नीमजाँ॥
किस तरह क्या हो सिफ़त इश्क़े राहज़न।
सब ख़ाक में मिला दिया ज़ालिमने बांकपन॥
क़ैदे बलाये ज़ुल्फ़ गिरह गीर ने किया।
रोजन जिगर में एक निगाह तीर ने किया॥
बरबाद मुझको इश्क़ की तासीर ने किया।

उस पर ग़ज़ब नायाब फ़लक पीर ने किया ॥
बारे अलम ने मुझको सुबुकदोश करदिया।
और ख़ानये जिगर ग़मो हसरत से भर दिया ॥

यह कह बेहोश हो फिर ज़मीन पर लेटगया और आंसू की नदी आंखसे बहाने लगा मन्त्रीपुत्र कहने लगा अय पागल! दिल को सम्हाल प्रेम के बला से बचा प्रेमकी गली से पैर हटा यह बहुत बुरा जाल है अभी क्या है? बहुत से दुःख दर्द सहेगा यह मंज़िल सहज न समझ क़ब्र में सुलाने पर भी पीछा न छोड़ेगी, अब भी समझ और इस रञ्ज के नदी से पार होजा।

मन्त्रीपुत्र की बातें सुनकर वह यह शैर कहने लगा।

॥ शैर ॥

बारो जहां में इन दिनों मानिन्द ख़ार हूं।
किसी गुलबदन की चाह में सीना फ़िगार हूं॥
दर्दे जिग्र से और भी राज़ी निजार हूं।
वह कौन है इलाही जिस्पर निसार हूं॥
मिलता नहीं है उस बुते बेपीर का निशां।
ढूँढा हर एक जगह नगर पायेगा अब कहां॥

ऐ दिल तू जिसकी चाह में हुआ है नीमजां।
उसको ख़बर नहीं तेरी सद हैफ़ है मियां॥
अल्लाह ख़ूँ अगरचे तू अपना बहायेगा।
फिर तेरे हाल पर उसे न रहम आयेगा॥

यह शैर पढ़कर उस जवान ने बाद आह खींचने के कहा अय साहेब! मेरी कहानी सरासर प्रेमकी है महाशय प्रेमने मुझे मजनूं की पदवी दिया है एक औरत लैला नाम पर हुक्म करके ग़रीब के दिल को घबरा दिया है यह वह प्रेम है जिसने फ़रहाद को शीरीं के लिये हलाक किया और मजनूं को काली लट के पेंच में फँसाकर दरवाज़े २ फिरा दिया इसने हज़ारों को इस तरह ख़राब करदिया है। इसका असर मरते दम तक रहता है क़ब्र में भी अफ़सोस रञ्ज बना रहता है आख़िर पहले सिवाय दुःख रञ्ज व आफ़त के और कुछ हासिल नहीं होता मैं बहुतेरा उस फूल की याद भुलाताहूं मगर यह दिल नहीं समझता क्या करूं ज़मीन भी नहीं फटती हायरे कमनसीब मात! तू भी मुझ बेवारिस से किनारा कर गई।

मन्त्रीपुत्र कहने लगा कि मियां साहेब! अब आप यह

कहिये कि आपका दौलतख़ाना कहां है ? और आपका नाम क्या है ? मुझ ग़रीब को बतलाइये और उस फूल से आपकी मुलाक़ात क्योंकर हुई और वह आपसे क्यों परहेज़ करती है।

यह बातें मन्त्रीपुत्र की सुनकर वह जवान कहने लगा कि महाशय ! मेरा नाम गुलअन्दाम है मैं मुल्क अफ़रोज़ के बादशाह का लड़का हूं मेरे पिता सिवाय मेरे और कोई लड़का नहीं रखते थे इस सबब से मेरे बाप और मा अपने जान को मेरे ऊपर निवछावर करते थे एक दिन मैं मछली का शिकार करने नदी के किनारे गया और वहां देखा कि एक क़ब्रपर एक ख़ूबसूरत जवान चिल्ला २ कर रोता है और कहता है अय दोस्त ! तुम तो स्वर्गबासी हुए और हम यहां ज़िन्दा रहे अफ़सोस कि कुछ दिन भी प्रेम न निबाही।

अय दोस्त ! मैं इस बातको एक बुर्ज़ की आड़में छिपकर देखता और सुनतां रहा फिर उस जवान ने यह शैर पढ़ा।

॥ शैर ॥

मैं तड़पता हूं सुनिये बराये ख़ुदा,
चलो जानेदो बस जो हुआ सो हुआ।

मेरे ज़ख़म फ़िराक़ पै तूने फ़लक,
धरा मरहमे वस्ल न अब तलक।
मेरी क्या थी ख़ता जो हौ मुझसे ख़फ़ा,
चलो जाने दो बस जो हुआ सो हुआ॥

इस क़दर पढ़कर एक आह ठंढी खींचकर कहने लगा, अयि जानी यूसुफ़ सानी ! मेरी ज़िन्दगानी मुश्किल है तपे जुदाई का धक्का बड़ा है हाय तू मेरे सामने मर जाय फिर क्यों न आशिक़ जवान की जान जाय।

अय साहेब! यह कहकर जवान ने तलवार निकालकर अपने मुलायम गरदन पर मारना चाहा, तब तो मैं बेहोश होकर उसकी तलवार से लिपट गया और इस तरह कहने लगा, कि अय मेरे दोस्त! यह क्या काम करतेहो ? भला कहीं मरे के साथ मरा जाता है और जो मरगया फिर वह कहीं लौट कर आताहै इस तरह मैंने उस पागल से दो चार बातें कहीं, तब वह कहने लगा कि भला अब आप यह तो बतलाइये कि आपका आना यहां कहां से और कैसे हुआ ? तब मैंने अपना सारा हाल बयान किया और उस जवान को एक पेड़ के तले लेकर बैठगया, बांद

उसके मैंने कहा लो भाई अब तुम अपना हाल मुझे सुनाओ कि तुम कौन हो और क्या तुम्हारा नाम है? और यह क़ब्र किसकी है? जिसपर आप ज़ार ज़ार रोते हैं मेरी यह बात सुनकर वह जवान कहने लगा।

॥ ज़हूर की कहानी ॥

महाशय! मैं मुल्क फ़रकून का रहनेवाला एक ग़रीब भिस्ती का लड़का हूं ज़हूर मेरा नाम है मेरे बापके मुक़ा-बिले में कोई सौदागर पृथ्वीभर पर इस वक़्त नहीं है मालदार इतबारवाला हरकामों में होशियार किसी बात का रञ्ज न किसी बात का दुःख।

अय मित्र! जिस वक़्त मैं लायक़ विद्या सीखने के हुआ तो मेरे पिताने मौलवी साहेब के मदरसे में नाम लिख-वाया और उस वक़्त सब विद्यार्थियों को मिठाई खिलाई जनाब मौलवी साहेब को बहुतसा रुपया कौड़ी दिया और उनसे कहा कि मैं आपका गुलाम हूं आप इसे बहुत जल्दी होशियार कीजिये मैं आपको बहुत कुछ रुपया दूंगा आख़िर को मैं कुछ थोड़ेही दिन में ईश्वर की कृपासे पढ़ लिख-कर होशियार हुआ मौलवी साहेब ने मुझे सब विद्यार्थियों

का सरदार किया मैं उनको दिलसे अच्छी तरह पढ़ाता था।

एक दिन मौलवी ने फ़रमाया कि अय बेटे! आज तू हमारे साथ चलना और इन लड़कों को जाने दो मैंने कहा बहुत अच्छा, मुझको हुक्म से क्या उज़्र है जिस तरह आप कहें।

फिर मैं यह कह कर बैठगया मौलवी साहेब ने सब लड़कों को रोज़ के वक़्त से छुट्टी देदिया और मुझसे कहा लो चलो मैं झट उनके साथ चलदिया मौलवी साहेब का क़ायदा था कि जब लड़कों को पढ़ाकर मदरसे को बन्द करते तो बादशाह की लड़की को पढ़ाने जाया करते थे उस दिन मुझको भी साथ ले गये।

मैं और मौलबीसाहेब दोनों एक महल में पहुँचे वहां देखा तो दालान के आंगन में दो कुरसी नीलम की बिछी हैं सामने चिक पड़ी है सब्ज़ रङ्ग की एक कुरसी पर मौलवी साहेब और दूसरी पर मैं बैठ गया फिर मौलवी साहेब पढ़ानेलगे मैं सरको झुकाये बैठारहा जब मौलवीसाहेब सबक़ पढ़ाचुके तब एक मज़दूरनी अन्दरसे दो पान लगाकर लाई और जनाब मौलवी साहेब को दिया मौलवी

साहेब ने एक पान मुझे दिया और एक पान खुद खाया बाद एक घण्टे के मौलवी साहेब अपने मकान को चले गये और मैं अपने मकान को गया इसी तरह कुछ दिन बीतगये हमेशः मौलवी साहेब के साथ जाना और रोज़ एक पान खाकर चले आना। एक रोज़ का ज़िक्र है कि जिस वक़्त मौलवी साहेब सबक़ पढ़ा चुके और मज़दूरनी पान लेकर आई तो दोनों पान मौलवी साहेब को हस्ब मामूल न देकर एक मेरे हाथ में और एक उनके हाथमें दिया मुझे उसके ऐसा करने पर संदेह हुआ और मैंने उस बीड़े को आंख चुराकर खोलडाला देखा तो उसमें एक काग़ज़पर कुछ लिखा है मैंने उसको निकाल कर जेब में रख लिया और पान खाकर मौलवी साहेब के साथ मकान पर आया।

जब मैंने उस काग़ज़ को पढ़ा तो उसमें यह लिखाथा कि-

॥ शैर ॥

मरती हूं जिसकी चाह में उसको ख़बर नहीं।
आहा हमारी आह में मुतलक़ असर नहीं॥
अय आदमी! गुणानुबादकर ईश्वर का कि मुझसी

ख़ूबसूरत औरत तुझपर आशिक हुई वरना तुम कहां और मैं कहां अब मेहरबानी करके आप हमेशः मौलवी साहेब के साथ आया कीजिये वरना मुझको बड़ा रञ्ज होगा। मैं इस बात को पढ़कर बहुत रञ्जीदः हुआ और बुख़ार का बहाना करके दूसरे रोज़ मदरसे में भी नहीं गया मौलवी साहेब मेरे मकानपर आये और मेरे वालिद साहेब से कहा कि जनाब ! आज आपका लड़का मदरसे को नहीं गया वह चश्मा लगाये कुरसी पर बैठे थे एक बार खड़े होकर उन्होंने सलाम किया और कहा हुज़ूर कल उसको बुख़ार आगया था कल ज़रूर हाज़िर होगा मौलवी साहेब यह सुनकर पढ़ानेको चलेगये मगर जब उस ख़ूबसूरत औरत ने मौलवी साहेब को अकेला देखा फ़ौरन एक पु-रजा लिखा कि हुज़ूर आज क्या वजह हुई कि जो रोज़ आपके साथ आते थे वह आज नहीं आये मौलवी साहेब ने जवाब में लिखा कि उसको बुख़ार आगया है वह यह बात सुनकर बहुत घबड़ाई और बमुशकिल पढ़ना ख़तम किया और उस रोज़ मौलवी साहेबको पान भी नहीं दिया और उठकर दूसरे महल में चली गई मौलवी

साहेब ने थोड़ी देर तो पान की राह देखी फिर उठकर अपने मकान को चलेगये और निहायत दुःखी हुए कि या ईश्वर! आज क्या क़सूर मुझसे हुआ जो शाहज़ादी ने पान भी न नहीं दिया॥

अय साहेब! दूसरे दिन मौलवी साहेब मेरे मकान पर आये और अपने साथ मुझको पाठशाला में लेगये मैं बखुशी उसके साथ होलिया जब कि सब लड़कों को छुट्टी देचुके तो मुझसे कहा लो बेटे! चलो। मैंने कहा बहुत खूब चलिये। फिर मैं मौलवी साहेब के साथ उसके महल में गया जहांपर रोज़ जाया करता था एक कुरसीपर मौलवी साहेब बैठे और अलग दूसरी पर मैं बैठा थोड़ी देर हुआ होगा कि एक मज़दूरनी पानदान में कई बीड़े पान लाई और मौलवी साहेब को दिया मौलवी साहेब ने उसमें से एक पान मुझको दिया और एक पान खुद खाया थोड़े अरसे में दूसरी मज़दूरनी आई और एक पुरज़ा मौलवी साहेबके हाथ में दिया उसमें यह लिखा था कि हुज़ूर इतनी तकलीफ़ क्यों किया करते हैं केवल इनको ही मेरे पढ़ाने के वक़्पर भेज दिया करें यह मुझको पढ़ाकर चले जाया

करेंगे मौलवी साहेब ने उसके जवाब में लिखा कि आज तो मुझसे पढ़ लीजिये कलसे यही आपको पढ़ा जाया करेगा आख़िर को उस रोज़ तो मौलवी साहेब पढ़ा आये दूसरे रोज़ मौलवी साहेब ने मुझको अकेला भेजा मैं उस रोज़ निहायत उम्दा पोशाक पहनकर महल में पहुँचा और बदस्तूर कुरसी पर जाकर बैठगया कुछ देर हुई होगी कि वह जो सामने चिक पड़ी थी एक मज़दूरनी ने उठाई दूसरी मज़दूरनी ने मुझसे कहा कि भीतर आइये। अय भाई! मैं इस बात को सुनकर उठा और भीतर गया वहांपर अजीब तमाशा नज़र आया देखा कि एक चौकी चांदी की बनी है और जवाहिरात से पच्चीकारी चौकी में है। चारों कोनों पर छोटे २ पेड़ हीरा व पुख़राज के बने हैं और उस चौकी पर सुनहिला ग़लीचा बिछाहै तमाम कमरा हरा बिल्लौर का बना है शराब के शीशे रङ्ग बरङ्ग के बराबर जमा हैं और एक ख़ूबसूरत औरत मिस्ल परी के मुँहपर सब्ज़रङ्ग की ओढ़नी ओढ़े बैठी है फिर जिस वक़्त में चौकी के क़रीब पहुँचा एकदम उस परीने ओढ़नी चांद ऐसे चेहरेसे उठाकर मेरी तरफ़ देखा वहीं महाशय दिल ने साथ छोड़दिया

नज़र शोख़ ने शीशये दिल को तोड़दिया इश्क़ का तीर कलेजे के पार हुआ मैं बेहोश होकर गिर पड़ा ॥

अविनाशचन्द्र कहने लगा कि अयि चन्द्रमुखी ! ज़रूर प्रेम में फंसा हुआ बेहोश पड़ा है आजकी रात रहने दो वक़्त बहुत हुआ मुझे छुट्टी दीजिये कल बाक़ी क़िस्सा सुनाऊंगा ॥

इति क़िस्सा साढ़ेतीनयार का चौथाभाग सम्पूर्ण।